शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-5.375
Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No- 56-59
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर.

Corresponding Author :
डॉ. मेरली के पुन्नूस
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
सेंट स्टीफेंस कॉलेज, उषवूर.

कला, साहित्य और मीडिया में ट्रांसजेंडर का प्रतिनिधित्व - तीसरी ताली उपन्यास के संदर्भ में

शोध सार : आज ट्रांसजेंडरों के प्रति समाज के रवैये में बदलाव आया है, जिसके परिणामस्वरुप कला, साहित्य और मीडिया में ट्रांसजेंडरों की उपस्थिति देखी जा सकती है। आज वे जिस मुकाम में आ खड़े हैं उसके लिए उन्हें कड़ा संघर्ष करना पड़ा है। अपने बुलंद मंसूबे और कड़े संघर्ष से वे आज बुलंदियों को छू रहे हैं। जो क्षेत्र उनके द्वारा अछूते रहें हैं आज उसी क्षेत्र में (कला, साहित्य और मीडिया) में उनकी पहलकदमी देखी जा सकती है। साहित्य में प्रमुख पात्र के रूप में उनके संघर्ष को शब्दबद्ध किया जा रहा है। उनके इतिहास को पर्त – दर पर्त उघाड़कर उनकी इंसानियत को दर्शाने का कार्य किया जा रहा है। साहित्य द्वारा उन्हें स्वीकारे जाने की पेशकश की जा रही है। जहाँ दर – दर की ठोकरें उनके नसीब में थीं आज वहीं उनके माता – पिता उन्हें अपनाने लगे हैं। माता - पिता द्वारा उन्हें तालीम देकर अपने बलबूते पर खड़ा करने की मंशा भी जाग उठी है। उपन्यास की विनीता परिवारवालों द्वारा उपेक्षित होने पर भी हार नहीं मानती बल्कि समाज की मुख्यधारा से जुडकर अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब होती है। आज ऐसे कई ट्रांसजेंडर हस्तियाँ हैं जिन्होंने महत्वपूर्ण सफलताएँ हासिल की हैं। ऐसे व्यक्तित्वों में शबनम मौसी, नर्तकी नटराज, लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी, मानोबी बंद्योपाध्याय, कलिक सुब्रमण्यम, पद्मिनी प्रकाश, पृथिका याशिनी, जोयिता मण्डल, सिमरन, विद्या, रोज वेंकेटेसन आदि प्रमुख हैं।

बीज शब्द : ट्रांसजेंडर, गुरु, गिरिया, चेला, हिजड़ा, बस्ती, मीडिया, कला, दिल्ली।

विषय-वस्तु : 'तीसरी ताली' उपन्यास में एलजीबीटीक्यू के जीवन संघर्ष को दर्शाया गया है। उपन्यास की प्रमुख पात्र विनीता ट्रांसजेंडर है। विनीता के अलावा डिम्पल, नीलम, रीना, पिंकी, सुनयना, नरगिस, निकिता, विजय कृष्णा, मणि कलीता, राजू, सुप्रिया कपूर के जीवन के कटु अनुभवों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। विनीता के ब्यूटी पार्लर ने 'गे वर्ल्ड' की शुरुवात की। विनीता का ब्यूटी पार्लर फरीदाबाद एनआईटी के मर्केट में है। केवल समलैंगिक और ट्रांसजेंडर ही वहाँ आते हैं। ब्यूटी पार्लर में काम करनेवाले भी इसी बिरादरी के हैं। दिल्ली से भी

समलैंगिक यहाँ आते हैं। विनीता ने मनचंदा के इंस्टीट्यूट में नौकरी करते हुए अच्छे रुपये कमा लिए थे। पार्लर खोलने में नये पिता कांस्टेबल राज चौधरी ने भी उसकी मदद की थी। टीवी में विनीता के ब्यूटी पार्लर की खूब चर्चा हुई थी और अन्य पार्लर इसकी तुलना में पिछड़ गए थे। टीवी न्यूज़ चैनलों में यहाँ आनेवाले लोगों के इन्टरव्यू दिखाए गए थे। विनीता के ब्यूटी पार्लर में आनेवाले ग्राहक खुद को कम्फर्टेबल महसूस करते हैं, क्योंकि दूसरे पार्लरों में इनके जाने से पार्लरवालों को अच्छा नहीं लगता। विनीता द्वारा ब्यूटी पार्लर की नई ब्रांच की घोषणा की जाती है। टीवी चैनल जीटीवी में विनीता का रियल्टी शो 'द छक्का' काफी हिट हो रहा था। शो की एंकरिंग विनीता कर रही थी। शो में तीसरी योनि के असली लोगों के आत्म स्वीकार के साथ – साथ उनके संघर्ष को भी दर्शाया जा रहा था कि ट्रांसजेंडर होने पर भी उन्होंने खुद को कैसे मुख्यधारा से जोड़ा है। विनीता इस दुनिया की जानी – मानी हस्ती थी। शो में तीन लोगों को पेश किया जाता है, जिन्होंने बुलंदियों को छुआ है। उनके बचपन से लेकर जवानी तक के सफर को दिखाया जाता है। अब तक तेरह एपीसोड दिखाये गये थे। पहला एपीसोड विनीत से विनीता बनने के संघर्ष पर आधारित था। विनीता की संघर्ष यात्रा सिद्धार्थ एनक्लेव से केजी मार्ग, पुलिस स्टेशन, फरीदाबाद, साउथ दिल्ली और पेज थ्री तक पहुँचने की यात्रा थी। शो के अंत में विनीता दर्शकों से कहती है कि – "आगे के एपीसोड में हम आपके सामने तीसरी योनि के ऐसे ही लोगों के जीवन के हर पहलू को पेश करेंगे। सोमवार से शुक्रवार रात नौ बजे देखना न भूलियेगा – द छक्का।"[1] एपीसोड दर्शकों में बहुत लोकप्रिय हुआ था। अब कामयाबी विनीता के कदम छूने लगी थी – "पार्लर की सफलता के बाद विनीता पेज थ्री सर्किल में आ गई थी। फैशन शो में जज बनकर जाने लगी थी। पार्लर की लोकप्रियता को देखते हुए उसने फैसला किया कि वह देश के हर प्रमुख शहर में अपना पार्लर खोलेगी। पहले उसने मुम्बई में पार्लर खोला, फिर बैंगलूर में। दूसरे शहरों से भी माँग आई, तो उसने पार्लर की फ्रेंचाइजी देनी शुरु कर दी। इस तरह विनीता ब्यूटी की दुनिया की क्वीन बन गई।"[2] पैसा, शोहरत उसके कदम चूमने लगे। उसकी कीर्ति इतनी फैल गई कि उसके बिना मुम्बई और दिल्ली की पेज थ्री अधूरी मानी जाने लगी। इसप्रकार देखा जाए तो वह बहुत आगे बढ़ चुकी थी। वह एक सेलिब्रिटी की तरह अख़बारों की सुर्ख़ियों में आने लगी थी – "अंग्रेजी अख़बारों के पेज थ्री में उसकी तसवीरें अब आम हो गई थीं। पहले तो ये तसवीरें उसे रोमांचित करती थीं और वह तसवीरें छपवाने के लिए पार्टियों में बड़ी हस्तियों के आसपास मँडराती थी। लेकिन अब दूसरे अपनी तसवीर छपवाने के लिए उसके आसपास मँडराते थे। कैमरामैन उसे 'मैडम प्लीज' कहकर पोज देने के लिए रोकते।"[3] पूरी मिडिया में वह छा गई थी। उसने समाज में अपनी पहचान स्थापित कर ली थी। हर कहीं उसने अपनी धाक जमा ली थी।

विनीता के माता -पिता उसकी चाहत न समझ सके। गौतम साहब की बड़ी चाहत थी कि उनका एक बेटा हो। सालों बाद उनके घर एक बेटा विनीत पैदा हुआ। लेकिन वह ट्रांसजेंडर निकला। विनीत के बड़े होने पर उसके मन में अपनी बड़ी बहनों की तरह सजने – सँवरने की चाहत बढ़ने लगी। गौतम साहब जबरन विनीता पर अपनी इच्छा थोपते। वह एक अजीब मानसिकता से गुजर रहा था। उसने खुद को इस स्थिति से मुक्त करने का निर्णय लिया और घर छोडकर चला गया। घरवालों ने उसकी खोज – खबर भी नहीं ली – "घर के और सदस्यों को उसकी अनुपस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। शायद सब मन ही मन यह मना रहे थे कि विनीत घर न लौटे तो अच्छा हो।"[4] उसके घर छोड़कर चले जाने पर गौतम साहब को विनीत को घर में रखने और उसके लिए समाज से जूझने के अपने फैसले पर अफसोस ज़रूर हुआ था। लेकिन विनीत से विनीता बनकर उसने यह साबित कर दिखाया कि उसका फैसला सही था। वह अपने फैसले पर अडिग रही। वह प्रतिशोध में अपने माता – पिता की तेरहवीं भी कर चुकी थी, इसके बावजूद भी वह अपने पिता से प्यार करती थी। हर बुजुर्ग में अपने पिता गौतम साहब को ही ढूँढती और बुजुर्ग विनीता की कमजोरी रहे हैं – "चाहे वह गौतम साहब हों या कांस्टेबल चौधरी या फिर और कोई। गौतम साहब से वह कितनी ही नफरत करती हो, लेकिन उसके मन में बार – बार यह बात कौंधती है कि उसके पिता ने उसे ब्यूटीशियन की ट्रेनिंग न दिलाई होती तो आज वह इस मुकाम तक न पहुँचती। असल में उसकी

नफरत के पीछे उसका प्यार था .... पिता से बिछुड़ने की पीड़ा थी।"[5] विनीता को गौतम साहब ने चैनल में देखा तो पहचान लिया। उन्हें अपने किये पर अफसोस होता है कि उन्होंने विनीता पर विनीत बनने का दबाव न डाला होता। बेटे की चाहत में वे अंधे हो गए थे कि चालीस की उम्र पार करने के बाद भी लड़का पैदा करने की कोशिश उन्होंने की। वे विनीता से मिलकर प्रायश्चित करने के बारे में सोचते हैं। विनीता के दिल्लीवाले पार्लर में गौतम साहब उससे मिलने जाते हैं और एक पैकट उसे थमाते हैं जिसमें एक बनारसी साड़ी, कुछ चूड़ियाँ, बिंदी के पैकट और सस्ती किस्म की कुछ लिपस्टिक व मेकअप के सामान थे। इसप्रकार गौतम साहब, विनीता की नई पहचान को स्वीकारते हैं।

कला के क्षेत्र में अपनी पहचान बनानेवाली मणि कलिता की दास्तान को उपन्यासकार ने दर्शाने का प्रयास किया है। मणि कलिता ट्रांसजेंडर द्वारा गन्धर्व महाविद्यालय में डांस डायरेक्टर बनने की संघर्ष गाथा को लेखक ने प्रस्तुत किया है। रियल्टी शो द छक्का का चौदहवाँ एपीसोड मणि कलिता पर आधारित था। मणि कलिता का जन्म असम के गुवाहाटी में हुआ था। ट्रांसजेंडर होने के कारण उन्हें समाज के ताने सहने पड़े थे। लहूलुहान होकर भी वे चिंन्दियों में नहीं बिखरी। स्कूल के बच्चे उनके ट्रांसजेंडर होने का पता लगने पर उनका मजाक उड़ाते हैं। तंग आकर वे स्कूल छोड़ने का फैसला लेती है। आगे चलकर अपने गुरु अनंतकुमार की छत्रछाया में रहकर कथक सीखती हैं और कथक में पारंगत हो जाती हैं। वहाँ स्कूल का चपरासी उनके साथ बद्सलूक करता है। वे गुरु अनंतकुमार के कहने पर गन्धर्व महाविद्यालय के कथक डांसर के पद के लिए विज्ञापन देती हैं। आज वे महाविद्यालय की डायरेक्टर के पद पर आसीन हैं। वे लोगों से कहती हैं कि – "सच्चे दिल से काम किया जाए तो अपमान और विरोध भी आपका रास्ता नहीं रोक सकते।"[6] इसप्रकार वे लोगों को कुछ कर गुजरने की प्रेरणा देती हैं।

आगे कैमरा मुम्बई के कमाथीपुरा के राजू पर फोकस होता है। इस बस्ती की चाय की दूकान पर काम करनेवाला राजू जन्मजात हिजड़ा है। उसे हिजड़ापन और हिजड़ावृत्ति से नफरत है। जब हिजड़े रात के धंधे में निकलते हैं तब राजू लैम्प पोस्ट के नीचे पढ़ता है। स्कूल जाना उसके नसीब में नहीं है। उसके माता – पिता उसे एक दिन यहाँ अँधेरी रात में छोड़ गए थे। उसने अपनी पढाई जारी रखी। हर परीक्षा पास की। आज ग्रेजुएट हो गया है। इस बस्ती में रहते हुए एड्स और बीडी से ग्रस्त वेश्याओं और हिजड़ों की सेवा में अपना जीवन बिता रहा है। कमाथीपुरा बस्ती के निवासियों को एड्स से बचाने की मुहीम उसके द्वारा ज़ारी है। उसने एक एनजीओ भी बनाया है। एनजीओ में अब बहुत सारे लोग जुड चुके हैं। वह न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र संघ के एड्स को लेकर हुए सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुका है। टीवी पर जैसे ही राजू की दास्तान बयान कर ख़त्म होती है वह स्क्रीन में दिखता है और दर्शकों से कहता है – "हर बार की हार जीतने का जज्बा देती है।" वह तीसरी योनि के लोगों से अपील करता है – "उठो और समाज में अपना मुकाम बनाओ। अपना हक हासिल करो। हक भीख में नहीं मिलता, उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है।"[7]

आगे स्क्रीन पर मशहूर डांसर सुप्रिया कपूर की तस्वीर दिखाई जाती है। फिल्मों में उसके आइटम हिट हो चुके हैं। उसकी फीस बीस से पच्चीस लाख है। उसके कई चहीते हैं जो उसे पाने के लिए पागल हो रहे हैं। फ़िल्म मैगज़ीन में उसके प्रेम के कई किस्से छप चुके हैं। दर्शकों की समझ में यह नहीं आती कि सुप्रिया कपूर की तस्वीर इन ट्रांसजेंडरों के साथ क्यों दिखाई जा रही है। तब विनीता सच का खुलासा करती है कि वह भी ट्रांसजेंडर है। डांसर सुप्रिया कपूर अपने जीवन के अनकहे – अनसुने पहलू को उजागर करती हुई बेझिझक कहती है – "अपने तीसरी योनि में होने की बात को मैंने आज तक छिपाये रखा, क्योंकि मैं जानती थी कि उस रूप में समाज मुझे कभी स्वीकार नहीं करेगा। आज मैं एक मुकाम तक पहुँच गई हूँ और समाज से भिड़ सकती हूँ, तो अपनी इस पीड़ा का खुलासा करने की हिम्मत भी मेरे अंदर आ गई है।"[8] अपने ट्रांसजेंडर होने के खुलासे के बाद डांसर सुप्रिया कपूर को कई निर्माताओं द्वारा अपनी फ़िल्म से बाहर कर दिया गया। लेकिन उन्होंने अपना हौसला नहीं खोया, पूरे

आत्मविश्वास के साथ वे आगे बढीं। उन्होंने खुद फ़िल्म – निर्माता बनने का निर्णय लिया। अपने इंटरव्यू में उन्होंने बेझिझक कहा कि उन्होंने तो अपने हिजडत्व को छिपाया, लेकिन जो फिल्मी पत्रकार इस तथ्य से वाकिफ थे, वे भी चुप्पी साधे रहे। इसके पीछे शायद उन्हें ब्लैकमेल करने की उनकी मंशा यही रही हो कि उन्हें मोटी रकम न देने पर वे डांसर सुप्रिया कपूर की सच्चाई को जगजाहिर कर देंगे। उनके द्वारा रकम न दिए जाने पर भी अगर वे चुप रहे तो इसलिए कि सुप्रिया कपूर स्त्री की तरह बिक रही थी और उनकी मैगजीन के कवर की शान थी। मिडिया और सामाजिक मानसिकता की ओर इशारा करते हुए वे यों तीखा प्रहार करती हैं – "अब मैं थोड़े दिन हिजड़ी की तरह बिकूँगी। मैं कैसी हूँ ? क्यों हूँ ? कितनी पीड़ा सहती हूँ ? इन सवालों से किसी को सरोकार नहीं है। किसी को इस बात से कोई सरोकार नहीं है कि मेरे जन्म के बाद मेरी माँ ने मुझे देखकर आत्महत्या कर ली। बाद में बड़ी बहन सिर्फ इसी बात के लिए ससुराल से निकाल दी गई कि उसकी बहन हिजड़ी है। मेरे पिता किस तरह तिल – तिलकर मरे, इस बात से किसी को कोई लेना -देना नहीं है। मिडिया को तो बेचने से मतलब है। चाहे वह औरत हो या फिर हिजड़ी। जब तक बिकूँगी तब तक आप बेचेंगे।"[9] इसप्रकार वे भी अपनी दुखती रग को उजागर करती हैं।

विजय कृष्णा कर्नाटक आब्जर्वर न्यूजपेपर का सीनियर फोटोग्राफर है। विनीता, विजय की फोटोग्राफी की कायल है। विजय एक शराब कंपनी के लिए कैलंडरों की एक सीरिज बना रहा है। उसका थीम है – हिजड़े। खूबसूरत हिजड़ों की तलाश में वह देश के कोने – कोने में घूमता है। उसकी तलाश मंजू के रूप में रंग लाती है। मंजू ट्रांसजेंडर नहीं है। उसके माता – पिता गरीबी के कारण उसे डिम्पल ट्रांसजेंडर के हाथों बेच गए थे। मंजू, विजय के करीब आती है और अपने प्यार का इजहार करती है। तब विजय अपने ट्रांसजेंडर होने की सच्चाई का खुलासा करता है। आगे बताता है कि उसने अपने जीवन में ठान लिया था कि वह ट्रांसजेंडर की दर्दभरी नियति नहीं अपनाएगा – "दुनिया के दंश से अपने – आपको बचाने के लिए मैंने लगातार लड़ाई लड़ी और खुद को स्थापित किया। मैं नाचना – गाना नहीं, नाम कमाना चाहता था। भगवान राम के उस मिथक को झुठलाना चाहता था, जिसके कारण तीसरी योनि के लोग नाचने – गाने के लिए अभिशप्त हैं .....परिवार और समाज से बेदखल हैं .....।"[10] विजय कृष्णा ने भी ट्रांसजेंडरों की दर – दर ठोकरें खाने की नियति को नहीं स्वीकारा। समाज में फोटोग्राफर की मुक्कमल पहचान कायम की। कड़े संघर्ष से गुजरते हुए मुख्यधारा से जुड़ने की मुहिम में कामयाबी हासिल की।

निष्कर्ष : गोया कि वर्तमान दौर में साहित्य, कला और मिडिया में ट्रांसजेंडरों की पहलकदमी बढ़ी है। आज वे अपना इतिहास खुद रच रहें हैं। अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। समाज में अपनी मुक्कमल पहचान स्थापित कर अपने प्रति बरसों से कायम अवधारणाओं को मात दे रहें हैं। साहित्य द्वारा ऐसे मजबूत पात्रों को गढ़कर इस सच्चाई से रु ब रु कराया जा रहा है कि मुख्यधारा के समाज से जुड़ने के लिए इन्हें किसी की मदद की ज़रूरत नहीं है, बल्कि ये अपने बुलंद मंसूबे के सहारे मुख्यधारा की समाज में अपनी पैठ जमा रहे हैं। विनीत से विनीता बनी विनीता, राजू डांसर सुप्रिया कपूर, फोटोग्राफर विजय कृष्णा इसके मिसाल हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रदीप सौरभ – तीसरी ताली – पृ :175.
2. वही – वही – पृ :117.
3. वही – वही – पृ :117.
4. वही – वही – पृ :83.
5. वही – वही – पृ :119.
6. वही – वही – पृ :176.
7. वही – वही – पृ :176.
8. वही – वही – पृ :177.
9. वही – वही – पृ :178.
10. वही – वही – पृ :195.

•